

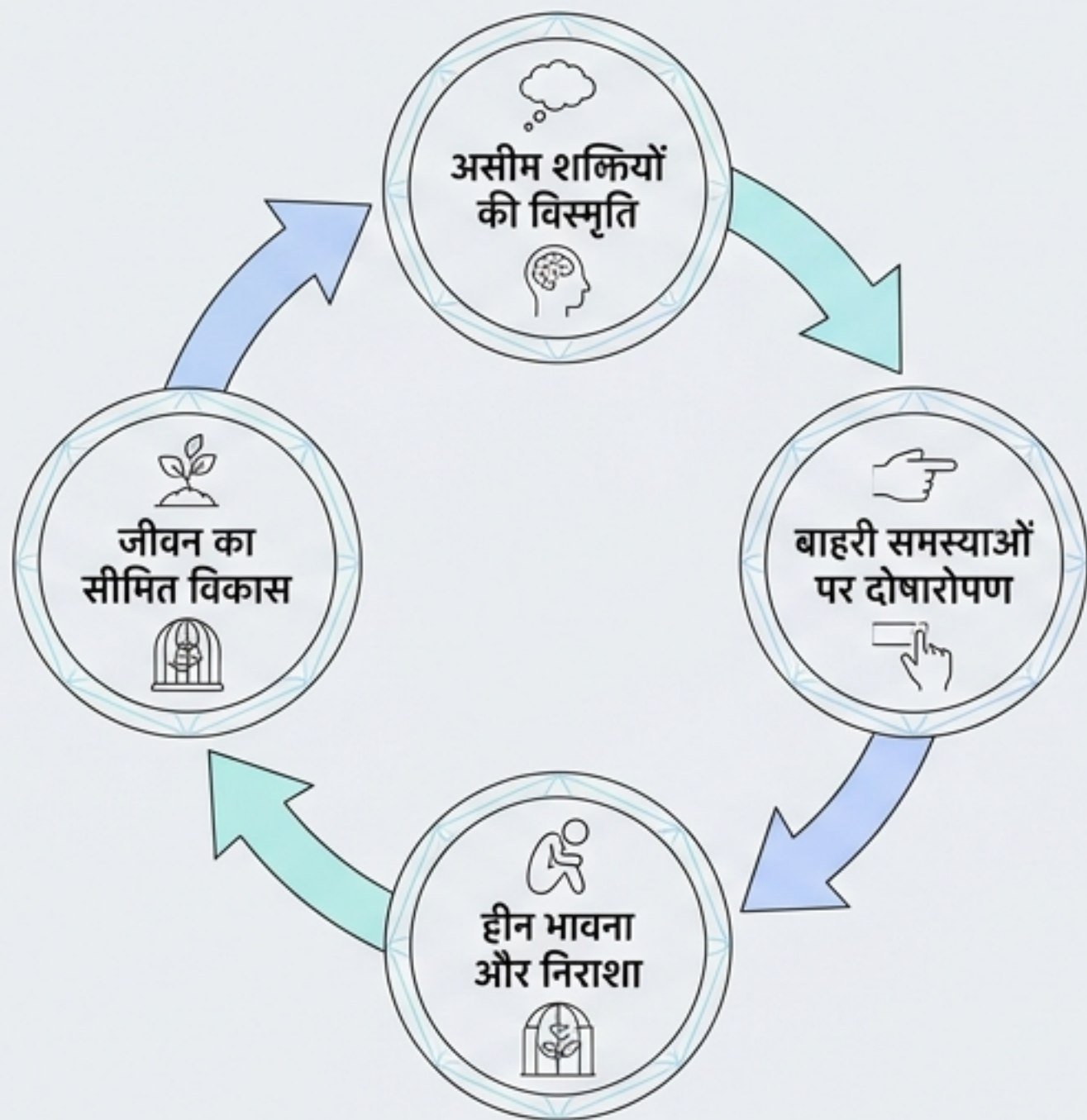
प्रतिभा परिष्कार: विज्ञान और अध्यात्म का महायोग

आम जन के लिए जीवन को महामानव स्तर तक ले जाने के १० विज्ञानसम्मत प्रयोग और मार्गदर्शन (अध्याय ५-८ का सार)

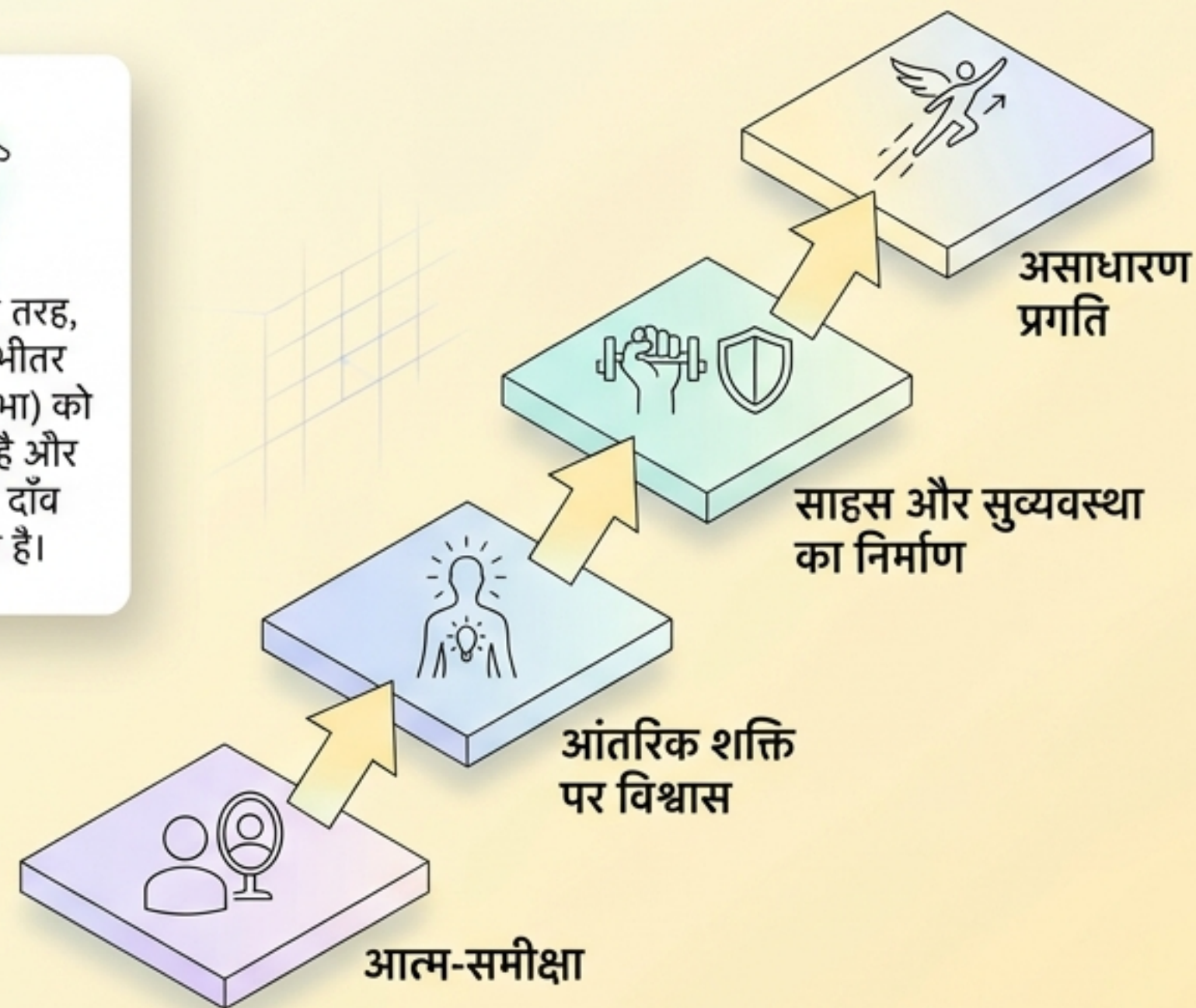
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

हम अपनी वास्तविक शक्ति को क्यों नहीं पहचान पाते?

अज्ञान का चक्र



आत्म-समीक्षा का मार्ग



कस्तूरी मृग की तरह,
मनुष्य अपनी भीतर
की शक्ति (प्रतिभा) को
बाहर खोजता है और
सारी जिन्दगी दाँव
पर लगा देता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में लाना सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्म साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगक्रांति वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

बल और शक्ति का सही अर्थ क्या है?

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदयुर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



शारीरिक/भौतिक बल

अहंकार बढ़ाता है

दूसरों पर धाक जमाता है

विनाश या स्वार्थ की ओर ले जाता है

पशु-समान वृत्ति

संकल्प बल / प्राणाग्नि



आत्म-नियंत्रण लाता है

लोकहित और सृजन करता है

साधारण को असाधारण बनाता है

देवोपम स्तर

सराहनीय वही बल है जिसका उपयोग सदुद्देश्य के लिए हो।

संकल्पशक्ति: विकास और सृजन की मूल ऊर्जा

स्रष्टा का सहायक: संकल्प
बल से प्रकृति पर विजय।



मनुष्य: आदिम स्थिति से
समाज, विज्ञान और अंतरिक्ष
तक का सफर।



अमीबा: प्रचण्ड
इच्छाशक्ति से अंगों
का विकास।



विंस्टन चर्चिल का दृढ़ विश्वास
जिसने भयंकर बमवर्षा के बीच
विश्व युद्ध का पासा पलटा।

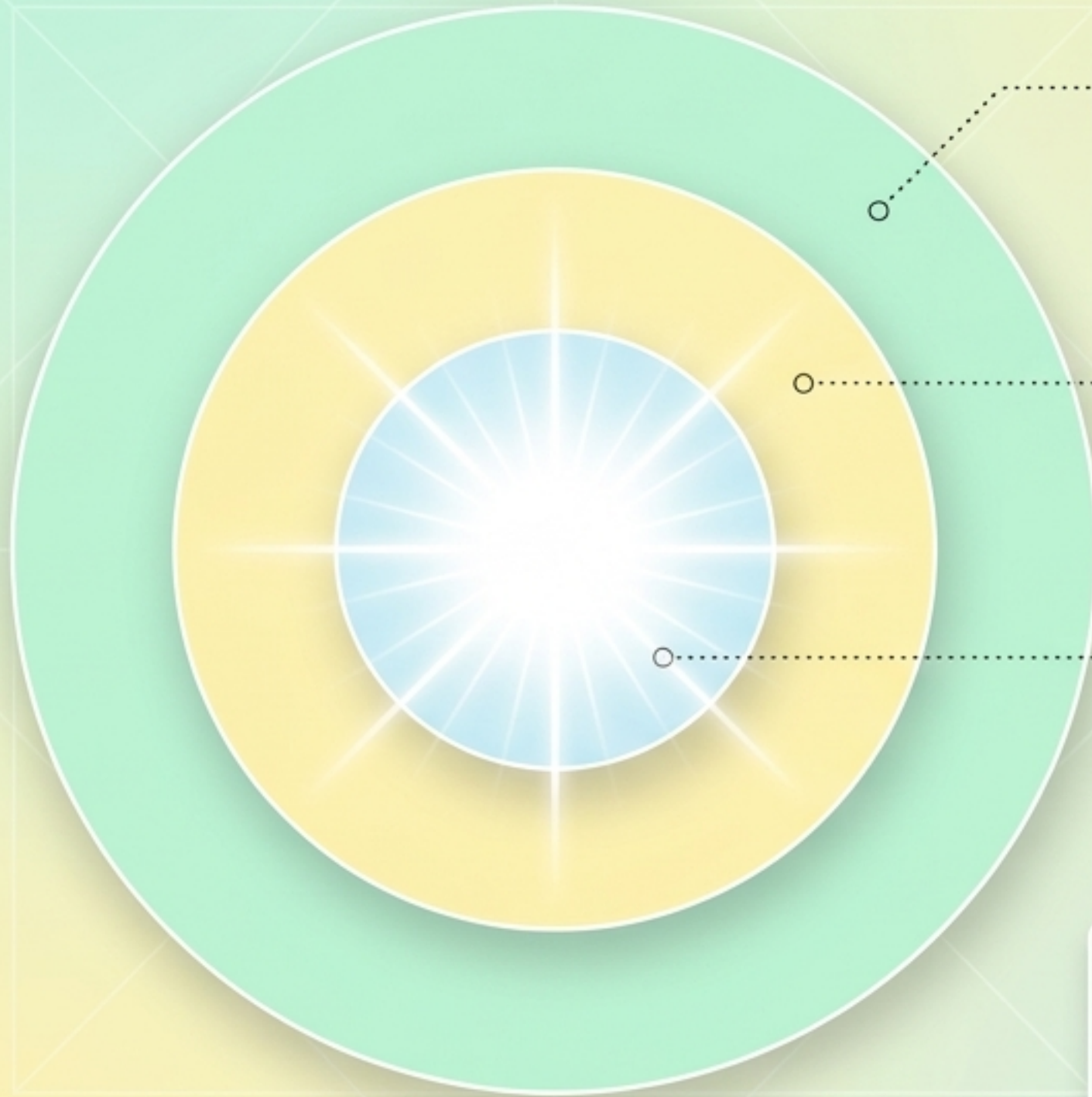


मिस्र के पिरामिड, पनामा नहर जैसे
महान निर्माण मात्र साधन नहीं,
संकल्पशक्ति के मूर्त रूप हैं।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रतिभा का जन्म: तपश्चर्या और संयम से



➤ **१. सादा जीवन:** अपनी लालसा और अवांछनीय महत्वाकांक्षाओं को सीमित करना। इससे समय और ऊर्जा बचती है।

➤ **२. तपश्चर्या:** बची हुई ऊर्जा को इन्द्रिय संयम, आत्म-नियंत्रण और लोक सेवा में लगाना।

➤ **३. तेजस्विता:** यही ऊर्जा जब परमार्थ में लगती है, तो ओजस्, तेजस् और वर्चस् के रूप में चमकती है।



वैज्ञानिक तथ्य: प्रतिभा कहीं बाहर से नहीं आती, अवांछनीयताओं की चट्टान हटाने से भीतर की ऊर्जा स्वयं प्रकट होती है। (उदा: गाँधी जी का ९२ पौंड का शरीर, पर असीम तेजस्)

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

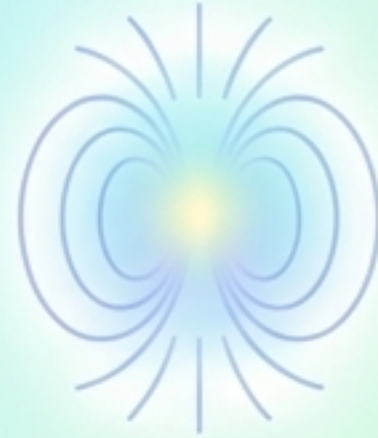
प्रतिभा विकास के १० विज्ञानसम्मत प्रयोग



प्रयोग १: स्वसंकेत - विचारों से शारीरिक कायाकल्प



सकारात्मक
विचार



आइडियोस्फीयर
का निर्माण



मस्तिष्क से प्राण
विद्युत का प्रवाह



कोशिकाओं और
इन्द्रियों का पुनर्जागरण

विज्ञान (Bio-feedback): जैसा मनुष्य सोचता है, वैसे ही शरीर में विद्युत प्रवाह जन्म लेते हैं। इससे रक्तचाप और हृदय दर पर सीधा नियंत्रण होता है।

अभ्यास: शांत बैठकर भावना करें कि मस्तिष्क से ऊर्जा पूरे शरीर को पुष्ट कर कर रही है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

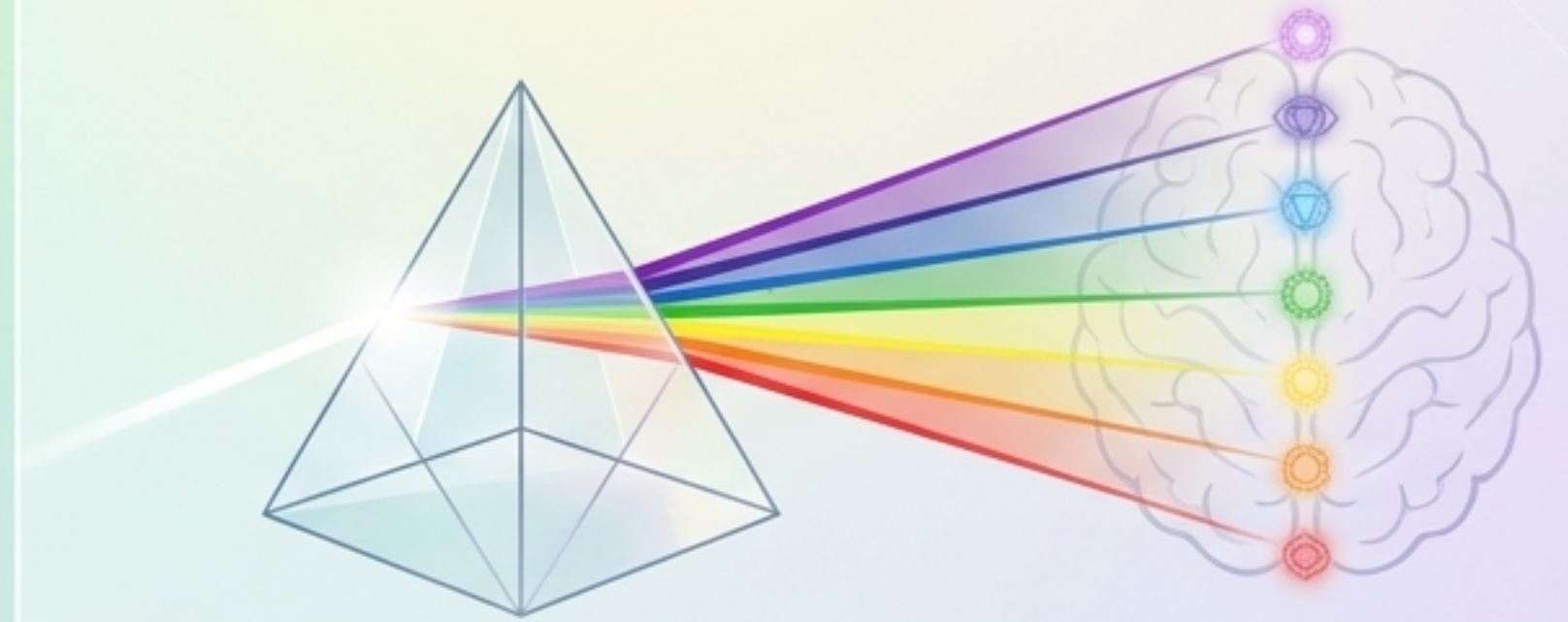
प्रयोग २ व ३: आत्मावलोकन और क्रोमोपैथी

दर्पण साधना (Mirror Gazing)



- ◆ विज्ञान: स्वयं को दर्पण में देखकर सकारात्मक भाव करने से आत्म-हीनता दूर होती है।
- ◆ अभ्यास: रोम-रोम में विद्युत शक्ति बढ़ने का विश्वास करें।
- ◆ परिणाम: चेहरे पर तेज और आत्मविश्वास की प्रत्यक्ष वृद्धि।

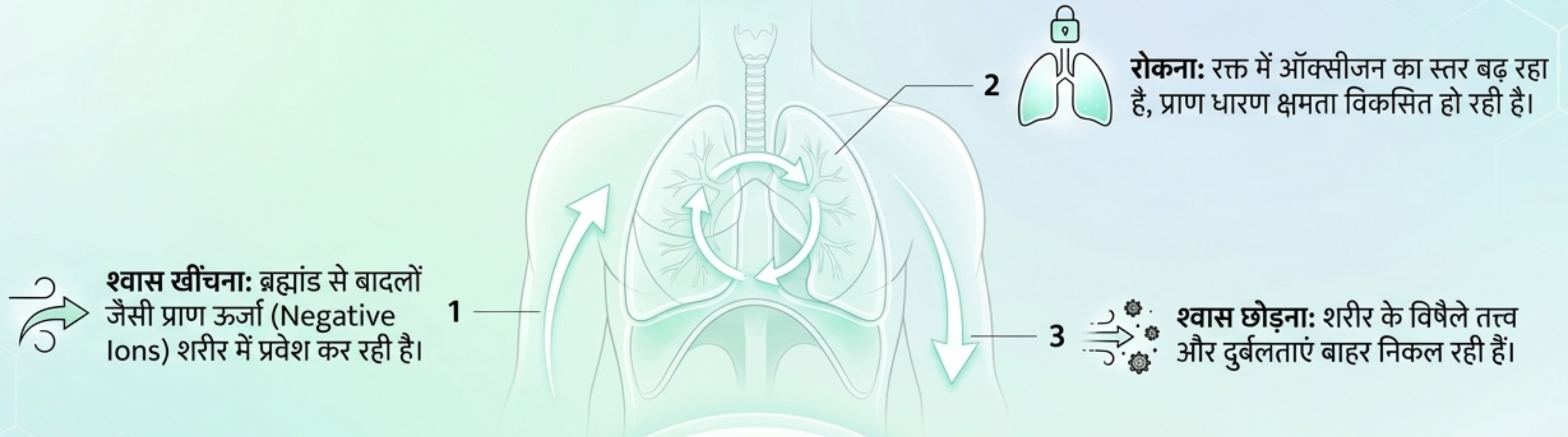
रंगीन वातावरण का ध्यान (Color Therapy)



- ◆ विज्ञान: सूर्य की किरणों के ७ रंगों में विशिष्ट रसायन होते हैं जो मस्तिष्क के सूक्ष्म चक्रों को सक्रिय करते हैं।
- ◆ अभ्यास: स्ट्रोबोस्कोप या रंगीन चश्मे से विशिष्ट रंग का ५-१० मिनट ध्यान।

प्रयोग ४: प्राणाकर्षण प्राणायाम - समष्टिगत ऊर्जा का अवधारण

वैज्ञानिक तथ्य: प्राण वायु केवल ऑक्सीजन नहीं है; यह चेतना जगत में 'निगेटिव आयंस' और विद्युत ऊर्जा के रूप में मौजूद है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रयोग ५: सूर्य वेधन प्राणायाम - ओजस् और वर्चस् की प्राप्ति



सिद्धांत और ध्यान

- ❖ प्रातःकालीन सूर्य की किरणों में अद्वितीय प्राण-ऊर्जा होती है।
- ❖ भावना करें कि आत्मचेतना शरीर से निकलकर सूर्यलोक तक जा रही है और वहाँ से ऊर्जा ग्रहण कर रही है।

शारीरिक प्रभाव

- ❖ दायीं नासिका (पिंगला नाड़ी) से श्वास खींचने पर नाभि स्थित ‘सूर्य चक्र’ उत्तेजित होता है।
- ❖ परिणाम: शरीर में ओजस् (Vitality) और मानसिक तेजस् की भारी वृद्धि।

प्रयोग ६ व ८: चुम्बक चिकित्सा और ध्वनि विज्ञान



चुम्बक स्पर्श

-  **तथ्य:** पृथ्वी एक विराट चुम्बक है। शरीर में भी लौह तत्व और विद्युत प्रवाह है।
-  **प्रयोग:** लौह चुम्बक को मस्तिष्क, रीढ़ और हृदय पर घुमाने से ऊर्जा का संतुलन बनता है।



नाद योग

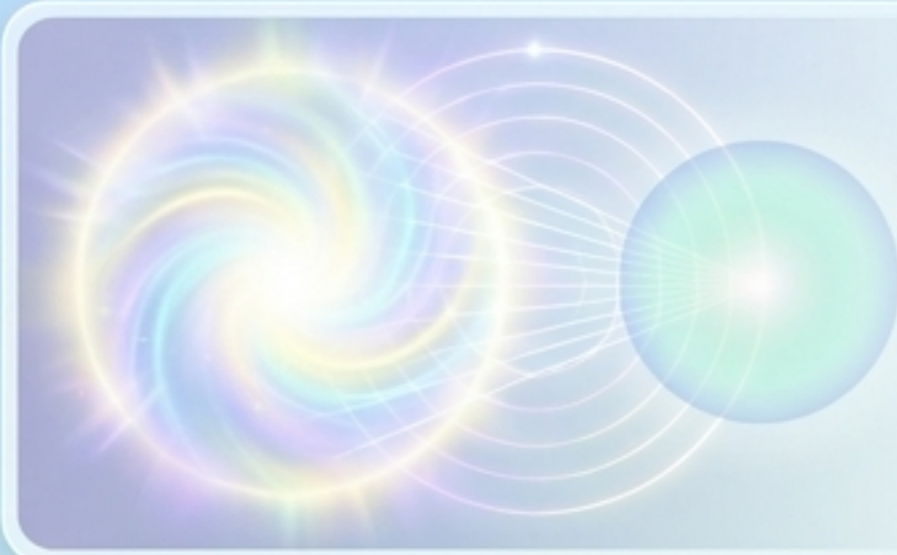
-  **तथ्य:** शब्द शक्ति चेतना का ईंधन है। विशिष्ट ध्वनि लहरियां मस्तिष्क के ऊर्जा केन्द्रों को उत्तेजित करती हैं।
-  **प्रयोग:** शांत वातावरण में ५-१० मिनट विशिष्ट संगीत सुनना।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने का
प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रयोग ७ व ९: ऊर्जा का हस्तांतरण और मानसिक शुद्धि



प्राणवानों का सान्निध्य

☀️ **विज्ञान:** उच्च प्राण-चेतना वाले व्यक्तियों (गुरु/महामानव) के संपर्क से साधारण व्यक्ति की ऊर्जा का स्तर उसी प्रकार बढ़ता है जैसे साबुन कपड़े को साफ करता है।



प्रायश्चित

☀️ **विज्ञान:** दुष्कर्मों से ‘गिल्ट’ पैदा होता है जो मानसिक ऊर्जा को सोख लेता है।
💧 **उपचार:** प्रायश्चित एक ‘मनोवैज्ञानिक धुलाई’ (Catharsis) है। यह मन का भारीपन दूर कर नई दिशा देता है।

प्रयोग १०: अंकुरित आहार (वनौषधि) - जीवनी शक्ति का टॉनिक

विज्ञानसम्मत तथ्य: जब बीज अंकुरित होते हैं, तो उनमें अभिनव और अतिरिक्त प्राण तत्व (Enzymes, Vitamins, Bio-photons) उत्पन्न होते हैं।



प्रयोग विधि: ७ गमलों में लगातार बीज उगाएं। ७वें दिन अंकुरों को पीसकर ३ माशे कल्क खाली पेट मधु के साथ लें।



परिणाम: यह मेधा, तेजस् और जीवनी शक्ति (Immunity) बढ़ाने का सबसे प्राकृतिक टॉनिक है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रतिभा परिष्कार का समग्र प्रभाव (सर्वांगीण रूपांतरण)



प्रतिभा के धनी ही इस नवयुग की सुनिश्चित सम्भावनाओं को पूरा कर दिखाएँगे।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी को मेरे ज्ञान-धर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

नवयुग का अरुणोदय निकट है...

- संसार की बड़ी समस्याओं को हल करने के लिए परिष्कृत प्रतिभाओं की आवश्यकता है।
- मनुष्य की ९३% मानसिक सामर्थ्य सोई हुई है। उठें, अपने मनोबल को जगाएँ!
- वैज्ञानिक-अध्यात्म के इन १० प्रयोगों से अपना कायाकल्प करें। स्वयं को बदलें, समाज को बदलें।

क्रान्तिधर्मी साहित्य पढ़ें, जीवन में उतारें और जन-जन तक पहुँचाएँ।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)